[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

हिमांशु जोशी की कथा साहित्य में सामाजिक संदर्भ

–राजेन्द्र सिंह बिष्ट

शोधछात्र, हिंदी विभाग, राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

मथितार्थ

हिमांशु जोशी के कथा–साहित्य में उत्तराखण्ड के पर्वतीय अंचल में परिव्याप्त स्थानीय सामाजिक लोक–जीवन का कुशलतापूर्वक चित्रांकन हुआ है। उनकी कहानियों के शीर्षक भी स्थानीय नामों, स्थानों अथवा लोकग्राह्य संज्ञाओं की व्यंजना करते हैं। वस्तुतः हिमांशु जोशी की कहानियाँ सामाजिक जीवन की विसंगतियों को बड़ी सहजता एवं सरलता से पाठक को परिचित कराती हैं तथा एक बड़ा सवाल अथवा प्रश्न छोड़ देती हैं। इन्हीं प्रश्नो की बानगी प्रस्तुत शोध–पत्र में दिखाई देती है।

संकेत शब्द : कस्बाई, स्वार्थलिप्सा, कुंठाग्रस्त, चरित्रहीनता, प्रदर्शन–प्रियता, स्वच्छंद।

हिमांशु जोशी ने भी सन् 60 के बाद के अन्य कुमाऊँ के हिंदी कथाकारों की भाँति आंचलिक, नगरीय एवं महानगरीय लोक जीवन से संबद्ध कहानियाँ लिखी है। इनके कहानी साहित्य में निम्न एवं मध्यम वर्गीय जीवन संदर्भों के सामाजिक सरोकार सर्वाधिक चित्रित हुए है। आंचलिक जीवन से संबद्ध इनकी कहानियाँ ग्राम्य एवं कस्बाई परिवेश से संबद्ध है। कतिपय कहानियों में भारतीय समाज के उच्च वर्ग का भी निरूपण हुआ है। हिमांशु जोशी की कहानियाँ ग्राम्य जीवन की विसंगतियों को बड़ी सहजता एवं सरलता से पाठक को परिचित कराती हैं तथा एक बड़ा सवाल अथवा प्रश्न छोड़ देती है।

इनकी कहानियों में समकालीन भारतीय समाज के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक और चरित्रहीनता संदर्भों का यथातथ्य अंकन हुआ है। इनकी कहानियों में मूल्यहीनता, अवास्था, पति–पत्नी के संबधों में टकराव, आर्थिक दबाव, नारी चेतना, चरित्रहीनता, प्रेम संबंधों में विफलता, भ्रष्ट राजनीति आदि के साफ–सुथरे चित्र अंकित है। हिमांशु जोशी कृत 'परिणति' कहानी में उच्च वर्गीय समाज की स्वार्थलिप्सा व्यक्त हुई है। इस कहानी का पुरूष पात्र अपनी स्वार्थ लिप्सा के कारण ही अपनी पत्नी की उपेक्षा कर पराई युवती की ओर आकर्षित होता है। वस्तुतः इस कहानी का पात्र चिरंतन अपनी स्वार्थ लिप्सा के अपराध बोध से ग्रस्त होता चित्रित हुआ है; ''विवाह हुए अभी दिन ही कितने बीते हैं! फिर ऐसी हरकतें क्या शोभा देती है। इतनी बड़ी नौकरी है, इतना बड़ा जिम्मेदारी का ओहदा है, शान है, शोहरत है, भारी नाम हैं। फिर यहाँ ..... विस्तता क्या सोचती होगी! उसके स्थान पर कोई और होती।''[1]

हिमांशु जोशी कृत 'अंततः' कहानी पात्र बिरजू ग्राम प्रधान से महाजन बने ग्रामीण समाज को बेवकूफ बनाता हैं। तो ग्रामीण समाज उसका विरोध करता है। ''तिमजला मा बैठि तिजारत करत हैं! ढोर गंवार समझ के हमको ठगत हो। धोखा देत हो। झूठ राम बनत हो! पहले अब रावन की लंका नहीं, झूठे राम–तोरी अजुध्या जराय डारेंगे। फूंक डारेंगे जे दुनिया सारी। चाण्डाल .... ठगत हो हमें।''[2]

हिमांशु जोशी द्वारा रचित 'कोई एक मसीहा' कहानी का पात्र सुरेश भाई एक समाज सुधारक है। यद्यपि वह विधायक है। समाज धर्म उसका कर्तव्य है। फिर भी वह आश्रम में जाकर असहाय एवं अनाथ लड़कियों का यौन–शोषण करने में भी संकोच नहीं करता है। आश्रम की संचालिका लाभू बेन के साथ उसके संवादों में उसकी समाज के प्रति सोच व्यक्त हुई है; ''ये नई भरती की है सुरेश भाई। लाभू बेन बोली, छुट्टियों में घर जाना चाहती थी। इसी बीच आपका इधर आने का कार्यक्रम–पत्र मिला। आपकी सेवा में कोई कसर रहे। यह कैसे हो सकता है। आप आते है कब–कब हैं, सुरेश भाई। ''तुम्हारी बड़ी लड़की जैसी कौन हो सकती है। सुरेश भाई दार्शनिक लहजे में बोले, ''इतनी सेवा–भावी, मैंने आज तक नहीं देखी।''[3] हिमांशु जोशी की 'हंसा' कहानी का पति के रूप में चित्रित पात्र अवनींद्र के माध्यम से समाज में फैले चरित्रहीनता को व्यक्त किया है। वह अपनी सर्वगुण पत्नी और बच्चों के बावजूद भी क्लबों में जाकर नवयुवतियों के साथ रंगरलियां मनाता है।

हिमांशु जोशी की 'सुनन्दा' कहानी का कथा नायक अपनी पत्नी की असमय मृत्यु से तनाव एवं कुंठाग्रस्त होकर समाज में अपने आप को अकेला महसूस करता है; ''सच, मैं भूल जाना चाहता था, अब सुनन्दा को, अपने को, सबको, पर ज्यों–ज्यों भुलाने का प्रयास कर रहा था, स्मृतियां तीव्रतर होती जा रही थी। सारी जगहें चिरपरिचित–सी लग रही थी। सुनन्दा के साथ जब–जब घूमने निकल आया करता था, वह न जाने क्या–क्या सोचती रहती थी। बाहर की ओर झांकती हुई।''[4]

हिमांशु जोशी की 'बूंद पानी' कहानी में विश्वेसर की पत्नी द्वारा समाज के प्रति गलत व्यवहार प्रतीत होता है। इस कहानी के पात्र विश्वेसर के घर गाँव से उसके बड़े भाई और बच्चों के आने पर उसकी पत्नी कालिंदी जिस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। उसमें निश्चित ही समाज में अपने से बड़ों की इज्जत न करना ही कहा जा सकता है : ''देखते क्या है, भैया जी जो तशरीफ लाए है, दो राजकुमारों को भी साथ लाए है। पूरे महीने–दो महीने डेरा डालकर पड़े रहेंगे। निकालों दो सौ रूपये नगद! न हो तो एकाध मेरा गहना गिरवी रख आओ भैया जी जो आए है न गाँव से। लाओगे कैसे नहीं।''[5]

हिमांशु जोशी की 'लकीर की परछाई' कहानी में अधिकारी द्वारा समाज व कर्मचारी का शोषण हुआ है। इस कहानी में एक ऑफिस का मैंनेजर ऑफिस में कार्यरत नवयुवती सुजाता को कई प्रकार से प्रताड़ित करता है, किन्तु लाचारी की वह न चाहते हुए भी नौकरी नहीं छोड़ पाती क्योंकि वह अपने परिवार की एकमात्र आर्थिक स्रोत है, और उसे पता है कि, यदि वह नौकरी छोड़ेगी तो ''डाक्टर की फीस पुराना सौ–डेढ़ सौ रूपये का बिल कौन चुकाएगा? किराया पिछले महीने का कौन देगा? राशन–पानी का खर्च कैसे चलेगा? लाख सिर टकराने के बाद भी नौकरी ताक पर धरी कहाँ मिलेगी? फिर कल से कहाँ–कहाँ अन्धी माँ का हाथ थामे दर–दर भटकेगी? भीख मांगेगी? नहीं नहीं।''[6]

हिमांशु जोशी का 'महासागर' उपन्यास में का युवा पात्र इंजीनियरिग में प्रवेश लेना चाहता है, किंतु आर्थिक दबाव के कारण वह परेशान है। उदाहरण दृष्टव्य है; ''वजीफे के सवा तीन सौ रूपये अब तक नहीं मिले। अब दो महीने से अधिक अरसा हो गया। मेजर वर्मा के यहाँ कुछ उम्मीद थी, पर..... दादा बाबू के घर जाने को जी नहीं करता। वह अपना रोजनामोर्चा खोलकर बैठ जाएगा तो यों ही शाम हो जाएगी। कल शाम भी तो.... उसे कही कुछ नहीं दीखता।''[7] आर्थिक दबाव के कारण साकेत अपनी पढ़ाई को पूरा करने में असमर्थ चित्रित हुआ है।

हिमांशु जोशी की 'दंशित' कहानी में समाज में तनाव से असमय वृद्ध होते नवयुवक का मार्मिक अंकन हुआ है। इस कहानी का प्रमुख पात्र नरेन्द्र के असमय सफेद होते बालों का कारण कुछ और नहीं बल्कि सामाजिक तनाव हैः ''बाल असमय सफेद हो जाते हैं– क्यों हो जाते है? आदमी समय से पहले बूढ़ा हो जाता हैं! थोड़े से समय में सदियों से सँजोये सपने पता

नहीं, कहाँ चले जाते है? हरिद्वार आने–जाने का खर्चा और बाबू जी की दवा का हिसाब लगता हूँ कि इसी दरवाजे पर फिर वही परछाई ठहर पड़ती है– बिज्जो से मिलने के बहाने।''[8]

हिमांशु जोशी की 'हरे सूरज का देश' कहानी में नारी पात्र द्वारा समाज में प्रदर्शन–प्रियता को करारा व्यंग्य व्यक्त हुआ है। ''उसकी बातों से लगता है कि वह पिथौरागढ़ के पहाड़ी जिले में कही विकास–विभाग में नौकरी करती है। छुट्टी में शायद घर लौट रही है, उसकी बाहरी बनावट के भीतर मध्य वर्गीय संस्कार रह–रह कर झांक रहे है।''[9] हिमांशु जोशी कृत 'आदमी जमाने का' कहानी में समाज में प्रदर्शन–प्रियता का जीता–जागता उदाहरण है। वह अपनी प्रदर्शन–प्रियता के कारण जहाँ सरकार के बड़े–बड़े अधिकारियों को अपने अधीन बना रखा है, वही उसकी प्रदर्शन–प्रियता से विकास कार्यों पर कई सवालियाँ निशान खड़े होते है, कहना यह है कि इस कहानी में व्यक्त प्रदर्शन–प्रियता स्वार्थ प्रेरित चित्रित होती है। इस कहानी का दूसरा पात्र मिश्रा जी जब लम्बी नौकरी के पश्चात अवकाश पर घर आता है तो घुग्घु बाबू जिस गर्म जोशी के साथ उसका स्वागत करता है। उससे उसकी प्रदर्शन–प्रियता ही व्यक्त होती हैः ''हृदय गदगद हो उठा। पलकें गीली हो गई। कसकर उन्होंने मुझे अपने सीने से लगा लिया। मेरे दोनों घुटनों को अपने सीने से कसकर जकड़े थे– जैसे बच्चा मचल रहा है। सम्भवतः इसके उपर वे पहुँच भी नहीं सकते थे।''[10]

हिमांशु जोशी की 'सफेद मेमने' कहानी की नवयुवती चरित्र पर्याप्त स्वच्छंद एवं आधुनिक विचारों की है। अपनी स्वच्छंदता की प्रवृत्ति से पहले वह नवयुवक पात्र को अपनी ओर आकर्षित करती है फिर बाद में अपने लेक्चरार के साथ संबंध स्थापित करती है। इस कहानी का नवयुवक चरित्र नवयुवती के चरित्र का उद्घाटन करता हुआ कहता है; ''यहीं कि कल लेक्चरार मेरे पाँवों पर गिरकर कह रहा था कि यदि मैं कह दूं कि बच्चा मेरा हैं, तो सारी समस्या सुलझ जाएगी। वह मेरे लिए कुछ भी करने को तैयार है। लड़की की देख–रेख वह पहले की तरह अब भी करेगा। लड़की भी यही कहती है, एकान्त में ले जाकर, मुझसे लिपट–लिपट कर रोती थी। कहती थी–वह तो केवल मुझे ही प्यार करती रही है। लेक्चरार ने तो कुछ लालच देकर मात्र बहका दिया था, ऐसा कोई दिन नहीं जब मुझे याद न किया हो और याद करके न रोई हो।''[11]

हिमांशु जोशी द्वारा 'आँखें' कहानी में सामाजिक मूल्यहीनता से चरित्रों के अन्तर्मन की पीड़ा का मार्मिक चित्र अंकित हुआ है। इस कहानी का कथानायक बापू और माँजी (सास) मूल्यहीनता से सर्वाधिक दंशित है, बड़े बेटे की असमय मृत्यु उसके बच्चों का लालन–पालन, अंधापन और छोटे बेटों की मूल्यहीनता वृद्ध चरित्र के अन्तर्मन की पीड़ा का कारण बनता है। हिमांशु जोशी 'अंततः' कहानी का पात्र बिरजू और उसकी माँ का रोजगार का साधन न होने पर समाज द्वारा उनको किसी प्रकार की मदद न मिलने से आर्थिक स्थिति खराब हो जाना। इनकी 'काला दरिया' कहानी की नारी पात्र उदुली आर्थिक कठिनाइयों के कारण समाज द्वारा बराबर, देह शोषण की शिकार होती है। हिमांशु जोशी की 'तर्पण' कहानी में निम्न वर्गीय जीवन के मार्मिक व्यथा है। इस कहानी की नारी पात्र मधुली आर्थिक कठिनाइयों से सार्वधिक संत्रस्त पति की अकाल मृत्यु, दो छोटे–छोटे बच्चों का लालन–पालन की जिम्मेदारी तथा समाज से कोई मद्दत नहीं बल्कि और ताने समाज के, इससे मधुली घोर यंत्रणा पाती है।

उसकी आर्थिक विवशता तब सामने आती है, जब पति के तेरहवीं के क्रियाकर्म के लिए न तो उसके पास तेल है और न खाने–पीने की सामग्री, आर्थिक विवशता के चलते वह क्रियाकर्म की बाती के लिए न तो तेल खरीदने में समर्थ है और न ही पंडितों के लिए प्रीतिभोज की व्यवस्था में समर्थ। वह अकेले अपने बच्चों को लेकर अमावस की बर्फीली ठण्डी रात में श्मशान के डरवाले तट पर जाती है। उसके साथ तीन अनाथ अबोध नंगे बच्चे खड़े है, जो सूखे तिनके की तरह जाड़े से काँपते हुए आँखे मीचे डूबे सूरज को जलधार चढ़ा रहे है, तर्पण कर रहे है माटी का पिण्ड दान कर रहे है और मधुली

आर्थिक कठिनाइयों से संत्रस्त होकर हाहाकार करती चित्रित हो रही हैः ''हे गंगा माई, तू ही देखना, तू ही विचार करना! ओ अनंत ..... ओ! अर्न्तजामी .....! तू ही ..... तू ही ई.....ई..... मधुली ने अपने काँपते हाथ जोड़ते हुए माटी की गैया के खुर पर माथा टिका दिया।''[12] जब तक अपने पति की तेरहवीं की सामग्री जुटाने के लिए कंसी ददा के पास पहुँचती है, तो कंसी ददा विपत्ति की मारी आर्थिक कठिनाइयों से घिरी मधुली के साथ बदसलूकी करता है। समाज से मद्द मागने आयी नारी के साथ अमानवीय व्यवहार का चित्रित करते हुए सामाजिक चेतना का निरूपण किया है।

हिमांशु जोशी की 'काला दरिया' कहानी का हरका असभ्य पात्र के रूप में चित्रित हुआ है वह अपनी चरित्रहीनता के कारण अपने गाँव की लड़की मधुली का देहशोषण ही नहीं करता है, बल्कि उसे देह व्यापार के धंधे में धकेलने में भी संकोच नहीं करता। इस कहानी की नारी चरित्र उदुली अपने अन्तर्मन की पीड़ा और हरका की चरित्रहीनता का उद्घाटन करती हैः ''उसने तब एक–एक कर अपने कपड़ों को उतारकर उसे एक–एक घाव गिनाए, देख, देख रांडका यह सब तेरी बदौलत हुआ। उस्ताद डंडे से पीटता है, जिस दिन कम मजदूरी होती है, तूने जिन्दा ही मुझे इस घोर पीब के कुंड में धकेल दिया। कसाई, तुझ पर कीड़े पडेंगे, कीड़े। वह फूट–फूट कर रो पड़ी।''[13]

हिमांशु जोशी की अंततः कहानी में समाज में फैले अंधविश्वास को चित्रित किया है। इस कहानी में बिरजू के घर से चले जाने पर उसकी माँ हरि जी के थान में उसके लौट आने की मनोती मागती है। हिमांशु जोशी कृत 'महासागर' उपन्यास रूढ़िग्रस्तता चित्रित हुई है। उदाहरण दृष्टव्य है; ''फोया सुंघकर उसने फेंक दिया था, अर्दली कहता है, ये निकोबारी अन्धविश्वासी होते हैं। प्रेतों की पूजा करते है। उसके सिर का घाव पक गया है, लेकिन दवा नहीं लगाती। इत्ता बड़ा घाव है, इत्ता!'' वह 'इत्ते' के साथ–साथ अंगुली की अंगूठे से नापकर गहराई बतलाता है।''[14]

हिमांशु जोशी द्वारा रचित 'तरपन' कहानी में समाज में हो रहे अंधविश्वास को चित्रित किया है, जिसमें पुरोहित के द्वारा इस अंधविश्वास को और भी गहरा किया जा रहा है। पुरोहितों के द्वारा पिण्डदान की अवधि टलने और दीपशिखा के बुझने पर जिस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त होती है। उससे भी निम्न वर्गीय अंधविश्वास का उद्घाटन होता है ; ''तो निदान यही है मधी की इजा, जैसे कि दुलि बामन अभी–अभी कहते थे– गरूड़–पुरान के मुताबिक कम से कम अपनी पहुँच के हिसाब से पाँच पिण्डदान, पाँच बामन, पाँच कुँवारियों के पांव तो पूजने ही पड़ेंगे। बाकि दान–पुन्न का क्या, जो जित्ता करे कम हैं।''[15]

हिमांशु जोशी की 'तर्पण' कहानी के परस्पर संवादों के द्वारा कुमाऊँ की ग्रामीण समाज की संस्कृति का उद्घाटन हुआ है। कुमाऊँ की ग्रामीण समाज की संस्कृति को व्यक्त करने वाला उदाहरण दृष्टव्य है; ''अरी अब रोती क्यों है? बावली हो गई? जाने वाला गया, लेकिन इन दुधमूहों का तो खियाल कर! पाहुनो का तो लिहाज कर! ''आज तेरहवीं है। खबरदार जो आँसू बहाये, पितर का तरपन शांति से नहीं किया तो पिरेत–जोहनी में छूटेगा नहीं।''बहू देखती क्या है, साम–जाम जल्दी जुटा, जुगत तैयार कर, नही तो अबेर हो जाएगी। पिण्ड–दान तो दिन चढ़ने से पहले होना चाहिए, हर हालत में सास्तरों में लिखा है।''[16]

हिमांशु जोशी ने भी महानगरीय एवं नगरीय परिवेश के मध्यम एवं उच्च वर्ग के जीवन संदर्भों पर आधारित कई कहानियाँ लिखी है। उदाहरण के लिए 'सफेद सपने' महानगरों में विकसित नई पीढ़ी की स्वच्छंद संस्कृति का निरूपण हुआ है। इसके अतिरिक्त हिमांशु जोशी की 'सुनंदा' कहानी में भी नगरीय समाज के मध्यम व उच्च वर्ग की आज के दौर में नगरों में विकसित अपसंस्कृति को सुनन्दा पात्र के माध्यम से चित्रित किया है। हिमांशु जोशी की 'कटी किरणें' कहानी में साम्प्रदायिक कट्टरता का उद्घाटन हुआ है। इस कहानी का पुरूष पात्र हरिपतिया और रजियानी दोनों पात्र सांप्रदायिकता

की कट्टरता से दंशित चित्रित हुए है। इस कहानी का प्रधान चरित्र हरिपतिया हिंदू लोहार है और रजिया मलिहार मुसलमान है। वह जब मलिहारिन की रजियानी को अपनी पत्नी बनाकर घर लाता है तो उसकी लोहार बिरादरी उसका घोर विरोध करती हुई चित्रित होती है, कहानी के आरम्भ में ही उसकी बिरादरी हरिपतिया के प्रति आक्रोश व्यक्त करती है, जिससे साम्प्रदायिकता कट्टरता ही व्यक्त होती हैः ''नकटे हरपतिया ने अपनी ही नहीं सारे लोहार–बिरादरी वालों की नाक काट दी, खूँना के मलिहार–मुसलमानों में चला गया। कलजुग हो गया, कल्पोत।''[17] साम्प्रदायिक कट्टरता के कारण ही उसे सामाजिक कार्यों से बेदखल किया जाता है। जब उसे एक बारात में जाने का निमंत्रण प्राप्त होता है तो कन्या पक्ष वाले उसे देखकर सांप्रदायिकता कट्टरता व्यक्त करते है; ''खबरदार रूदिया! हम लोहार–बाड़ियों की, शिल्पकारों की बारात में मलिहार–मुसल्यिए को लाएं हो! कन्या का ब्याह हम बाँज–बुरोझ के पेड़ से कर देंगे।''[18]

हिमांशु जोशी द्वारा रचित 'महासागर' उपन्यास में सामाजिक आदर्श का निरूपण हुआ है। इस उपन्यास के पात्र बाधवानी के माध्यम से सामाजिक आदर्श व्यक्त हुआ है। उदाहरण उद्धृत है; ''कितनी अजीब बात है।'' मिस्टर बाधवानी कहते हैं, ''तुम में और मुझ में कितनी समानता है! देखो न यह यात्रा भी आज साथ–साथ कर रहे है। हमारे विचारों में भी कितनी समानता है!''[19]

संदर्भ संकेतः

जोशी, हिमांशु, 1. परिणति (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995,पृ090

2. अंततः तथा अन्य कहानियाँ, किताबघर, दिल्ली,1995,पृ014

3. कोई एक मसीहा (मनुष्य चिह्न तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर,दिल्ली, 1996,पृ025

4. सुनन्दा (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995,पृ0129

5. बूंद पानी (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995,पृ0200

6. लकीर की परछाई (मनुष्य चिह्न तथा अन्य कहानियाँ)किताबघर, दिल्ली,1996,पृ0105

7. महासागर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1987,पृ019

8. दंशित (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995,पृ0152

9. हरे सूरज का देश (जलते हुए डैनेः तथा अन्य कहानियाँ)किताबघर, दिल्ली,1996,पृ0सं037–47

10. आदमी जमाने का (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995 पृ018

11. सफेद मैमने (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995, पृ0सं0196–197

12. तर्पण (जलते हुए डैने तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1996,पृ047

13. काला दरिया (अंततः तथा अन्य कहानियाँ) किताबघर, दिल्ली,1995,पृ035

14. महासागर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1987, पृ077

15. तर्पण (जलते हुए डैनें) किताबघर, दिल्ली,1996,पृ041

16. वही, पृ037

17. कटी किरणें (जलते हुए डैन) किताबघर, दिल्ली,1996 पृ0112

18. वही,पृ0116

19. महासागर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,1987,पृ059